अध्याय छः

अमरकांत की कहानियों का शिल्पपक्ष

अध्याय छः
अमरकांत की कहानियों का शिल्पपक्ष

किसी वस्तू या रचना के निर्माण के लिए जो पद्धति अपनाई जाती है उसको शिल्प कहते हैं। जिस प्रकार एक मूर्तिकार अपनी सृजनात्मकता एवं भावना के संयोजन करके शिला से मूर्ति की सृष्टि करता है, उसी प्रकार एक रचनाकार अपनी सृजनक्षमता एवं कल्पना के योग से एक उत्तम रचना का सृजन करता है। इस प्रकार रचनाकार की सृजन पद्धति में कई प्रकार के तत्वों का समावेश होता है जो अपनी सृष्टि को सफल बनाता है। इस अध्याय में अमरकांत की कहानियों की शिल्पगत विशेषताओं का अध्ययन हुआ है। प्रसिद्ध आलोचक विश्वनाथ त्रिपाठी के शब्दों में "अमरकांत उन रचनाकारों में हैं, जिनकी कहानियाँ न केवल कथ्य और शिल्प की दृष्टि से बेजोड हैं, बल्कि जो हमारे समय का अपूर्ण ही सही, प्रामाणिक दस्तावेज़ है।"[1] अमरकांत ने अपनी कहानियों में विभिन्न शैलियों, शब्द भेदों, प्रतीकों, लोकोक्तियों एवं मुहावरे का प्रयोग किया है जिससे कहानी के शिल्प बहुत ही प्रभावशाली हो उठे हैं। प्रस्तुत अध्याय में उनकी कहानियों के इन तत्वों के आधार पर अध्ययन-विश्लेषण हुआ है।

---

1. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत : एक मूल्यांकन, पृ. 146

6.1 कथ्यगत एवं चरित्रगत विशेषताएँ

कहानी की बनावट या बुनावट का दूसरा नाम ही शिल्प है। कथ्य कहानी शिल्प की पहली आवश्यकता है। जहाँ तक अमरकांत की कहानियों का सवाल है, उनकी कहानियाँ एक खास सरल अंदाज़ में कही गई है। अमरकांत के लिए शिल्प सहज अभिव्यक्ति का अंग है। परमानन्द श्रीवास्तव की राय में "शिल्प अमरकांत के लिए सहज अभिव्यक्ति का हिस्सा है और अभिव्यक्ति का संयम रचनात्मक प्रभाव का खास गुण है।"[1] अमरकांत की कहानियों का आधार मधयर्ग है। मध्यवर्गीय ज़िंदगी की आबोहवा को वे जानते हैं। उनकी कहानियों को पठते समय पाठक यह ज़रूर अनुभव करेंगे कि उनकी कहानियों में चरित्रों की उपस्थिति विरल है, जो कहानी को कथ्यप्रधान बनाती है। परमानंद श्रीवास्तव के अनुसार "कथ्य.... कथ्य के भीतर केवल संदेश ही नहीं आता-परिस्थितियों के सामान्य ब्यौरे भी आते हैं। इन्हीं के भीतर से जीवन की घुलती-फैलती रूप धारण करती है।"[2] जैसे कि पहले कहा जा चुका है अमरकांत की कहानियों की आधार भूमि मध्यवर्ग की है। वहीं से उन्होंने चरित्र को चुना है। चरित्रों की बुनावट एक सतर्क युक्ति के आधार पर की गई है। निर्मल सिंहल के शब्दों में "पात्र की केवल बाह्य रूपाकृति के चित्रण से पात्र का समग्र चित्र या बिंब पाठक के मन में नहीं उभरता। क्योंकि यह एक स्थिर चित्र होता है। पात्र की चेष्टाओं उसके आचरण या स्थिति-विशेष में अन्य पात्रों के प्रति उसकी प्रतिक्रिया या परस्पर घात-प्रतिघात, उस स्थिर चित्र को

---

1. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. 169
2. वही, पृ. 170

गतिशील सजीव और विश्वसनीय बनाते हैं। इससे जहाँ स्थिति का विकास होता है। वहीं पात्र के चरित्र का उद्‌घाटन भी होता है। किसी विशेष स्थिति के अंतर्गत विभिन्न पात्रों की चेष्टाएँ व अन्य पात्रों को लेकर उनकी प्रतिक्रियाओं के माध्यम से ही कहानीकार कहानी की संवेदना निर्मित करता है और 'जिस ढंग से' कहानीकार इस संवेदना या प्रभाव की सृष्टि करता है, वस्तुतः वही उसका रूपपक्ष है।"[1] अमरकांत की कहानियों की संवेदना वास्तव में स्वातंत्र्योत्तर भारतीय ज़िंदगी की संवेदना है। अमरकांत की कहानियों का कथ्य और उनके पात्र इस संवेदना से गहराई से जुड गए हैं। अमरकांत की 'ज़िंदगी और जोंक' का रजुआ और शिवनाथ बाबू 'मूस' कहानी के 'मूस', परबतिया, 'दोपहर का भोजन' की सिद्धेश्वरी, 'फुलरानी' की फुलरानी, 'डिप्टी कलक्टरी' का नारायण बाबू, 'प्रिय मेहमान' की 'प्रमीला', 'लड़का लड़की' की तारा आदि पात्र कहीं-न-कहीं इस संवेदना से तीव्र रूप से जुड गए हैं। इसका विस्तृत अध्ययन दूसरे अध्याय से लेकर पाँचवें अध्याय तक हुआ है। इसलिए उनकी कहानियों की अन्य शिल्पगत विशेषताओं को इस अध्याय में अधिक प्रमुखता दी गई है।

6.2 भाषिक विशिष्टताएँ

कहानी के शिल्प का सबसे महत्वपूर्ण पक्ष है - अभिव्यक्ति पक्ष। अभिव्यक्ति के लिए भाषा की ज़रूरत होती है। अर्थात् भाषा कहानी की सफलता का नियामक तत्व है। कथ्य को पाठक के सम्मुख पेश करने में तथा पाठक के हृदय को प्रभावित

---

1. निर्मल सिंहल, नई कहानी और अमरकांत, पृ. 149

करने में भाषा की अहमियत बहुत बडी है। सीधी सादी, सरल, सहज भाषा में विषयवस्तु की अभिव्यक्ति होने से पाठक प्रभावित होंगे। भाषा को भंगिमा प्रदान करने के लिए तथा अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए कहानीकार बिंब, प्रतीक, मुहावरे और लोकोक्तियों से उसको सजाते-संवारते हैं। उसमें संदर्भानुसार अन्य भाषाओं के शब्दों को जोडते हैं। तब भाषा बनी-बनाई ढाँचे से बाहर निकलकर एक नया रूप धारण करती है तथा प्रभावोत्पादक बन जाती है। डॉ. नीरज शर्मा कथन है - "कहानी केवल कथा और कथन नहीं। प्रभावान्विति उसकी कसैटी है। 'प्रभावान्विति' तभी संभव है जब कहानीकार सटीक बिंबों, रूपकों तथा प्रतीकों का चयन करे। लोक जीवन के गान, इतिहास संदर्भों से वह अपनी रचना को संपृक्त करें।"[2] अमरकांत की भाषा इस अर्थ में प्रभावोत्पादक है। उन्होंने अपनी भाषा को प्रतीकों, रूपकों आदि से सजाया है। उनकी कहानियों की भाषा मध्यवर्ग की है। इसलिए उन्होंने प्रसंगानुकूल उसमें प्रचलित मुहावरे और लोकोक्तियों का प्रयोग किया है। संदर्भानुसार दूसरी भाषा के शब्दों का चयन भी किया है। भिन्न-भिन्न शैलियों के प्रयोग से उसको संपुष्ट भी किया है। वस्तुतः उनकी भाषा सहज, सरल तथा आत्मीय है और उन्होंने इसी सहज एवं सरल भाषा में गंभीर व्यंजनाएँ भी दी है।

6.2.1 शब्द-प्रयोग

शब्द भाषा की सबसे महत्वपूर्ण इकाई है। कहानी के व्यापक संदर्भ को पूरा करने के लिए कहानीकार एक-एक शब्द को टटोलकर, देख परख कर रखते

---

1. डॉ. नीरज शर्मा, अंतिम दशक की हिन्दी कहानियाँ संवेदना और शिल्प, पृ. 52

हैं। अमरकांत की कहानियों का शब्दभंडार सादगी से युक्त एवं विशिष्ट है। उन्होंने तत्सम, तद्भव, देशज, अरबी, फारसी तथा अंग्रेज़ी भाषाओं के बहु प्रचलित शब्दों का प्रयोग अपनी कहानियों में किया है। गोविंद स्वरूप गुप्त ने 'जनसाधारण की भाषा का कोश' नामक अपने लेख में कहा है - "अमरकांतजी तत्समप्रधान लेखक हैं।"[1]

6.2.1.1 संस्कृत शब्द

अमरकांत की कहानियों में संस्कृत शब्दों का बाहुल्य देख सकते हैं। 'अंकुश, 'आग्रह', 'आत्मा', 'आदर्श', 'नैतिकता', 'क्रान्ति', 'खत', 'सेवा', 'चित्र', 'साहस', 'मृग', 'राग', 'वनस्पति', 'समाचारपत्र', 'महान', 'संघ', 'अंक', 'द्वंद्व' आदि उनकी कहानियों में प्रयुक्त संस्कृत शब्द है।

6.2.1.2 तद्भव शब्द

लच्छन, भाषा, करपा, धरन-करम, मरद, दइव, उपास, परमेश्वर, तीरथ, सरग, अछूता आदि तद्भव शब्दों का प्रयोग कहानियों में किया गया है।

6.2.1.3 देशज शब्द

लफंगई, छिनाल, जाँगर, घइली, मरलिलौना, जुगाई, भरसायँ, मोटइनी, लसरिया, घिनई, करइत, पिडकते, चिरकुट, खुद्दी-चुन्नी, खजाह, कटाह-कुकुर,

---

1. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. 241

मुँहझौंसी, टँगरी, बुझौती, पगहिया, धकिया, लासा, सानी, अटण्ड, धरान, जवार, भकुआ, मलका-मलका आदि देशज शब्दों के प्रयोग से अमरकांत ने कहानी के पात्रों को एवं परिवेश को आत्मीयता और प्रामाणिकता प्रदान करने की कोशिश की है।

6.2.1.4 अरबी एवं फारसी शब्द

अव्वल, आदत, इस्तेमाल, कसाई, गुलामी, गम, गायब, जुल्म, ताकत, दहशत, फैसला, फिराक, लतीफ, ताकत आदि अरबी शब्दों के साथ-साथ उस्ताद, कम्बख्त, और खर्च जैसे फारसी शब्दों को भी अमरकांत ने अपनी कहानियों में स्थान दिया है।

6.2.1.5 अंग्रेज़ी शब्द

ट्रेन, आर्टिस्ट, कमर्शियल आर्ट, कंपनी, अफसर, एजेंट, प्रोफेसर, प्लेटफार्म, पेपर, फ्री-लांस, जोकर, डयरी, सेकेंड-क्लास, होटल, रिजर्वेशन, कार, पोस्टर, मशीन, मीटिंग, बासिंग, डोज, ब्रश आदि प्रचलित अंग्रेज़ी शब्दों का संदर्भानुसार प्रयोग अमरकांत ने किया है।

6.2.1.6 ध्वन्यात्मक शब्द

हकर-हकर पानी पीना, खर्र-खर्र खर्राटे भरना, हटर-हटर बातें करना, डस-डस चलना, लपर-लपर चलना, डहक-डहककर रोना, धड-धड़ नमस्कार करना, चापुड-चापुड़ खाना, सुड-सुड पीना, खी-खी हँस पडना, मुटर-मुटर ताकना,

डकारकर-डकारकर खाना, टुकर-टुकर देखना, गट-गट निगलना आदि ध्वन्यात्मक शब्दों के प्रयोग से अमरकांत ने अपनी भाषा को विशिष्ट बनाया है।

6.2.1.7 निरर्थक शब्द

अमरकांत ने दो समानार्थी शब्दों को एक साथ मिलाकर प्रयोग किया है। ऐसे प्रयोग अधिकतर पात्रों के वार्तालाप को सहज स्वाभाविक बनाने के लिए सफल हुए है, जिनको हम आम बोलचाल की भाषा में प्रयुक्त करते हैं। उदाहरण के तौर पर झूठ-मूठ, नंग-धडंग, अटरम-सटरम, ओना-कोना, फैला-फैलू, फाड़-फाडू, नौकर-चाकर, लौड़ी-मजूरिन, अंतरा-संतरा, शर्म-लेहाज, साथ-संगत आदि को लिये जा सकते हैं।

6.2.2 वाक्य संरचना

अमरकांत की वाक्य संरचना भी अत्यंत विशिष्ट है। ममता कालिया के साथ हुए अपने साक्षात्कार में उपेन्द्रनाथ अश्क कहते हैं - "उनकी वाक्य-संरचना भी अपने समकालीनों के भिन्न है। जैसे अमरकांत यह नहीं कहेंगे कि उसने दूकान खोली और असफल हो गया। वे कहेंगे - "उसने छोटी-सी दूकान खोली थी और उसमें घाटा उठाने का सम्मान प्राप्त किया था। अथवा वे नहीं लिखेंगे कि अभी भी वह पुराना सपना पाले हुए हैं, वरन् लिखेंगे - "खैर अब भी उसका महान उद्देश्य पुस्तक प्रकाशन द्वारा लखपति बनने का है।' एक ओर वाक्य देखो- 'इसके बाद शिकायतों के कुछ महाभियान शुरू हुए जो अन्य कर्मचारियों के स्वास्थ्य के लिए

अत्यंत लाभकारी सिद्ध हुए।' ऐसे वाक्यों का उनकी कहानियों में अंत नहीं। इन्हीं हास्य-व्यंग्य मिले वाक्यों से वे इच्छित प्रभाव पैदा करते हैं।"[1] इस प्रकार उनकी वाक्य संरचना भी अद्वितीय है।

6.2.3 शैली

अमरकांत ने अपनी बात को पाठकों तक पहुँचाने के लिए तरह-तरह की शैलियों को अपनाया है। उनकी कहानियों में शैलियों की विविधता देख सकते हैं। आत्मकथात्मक शैली, रेखाचित्र या व्यक्तिचरित्र की पद्धति, पत्रात्मक शैली, पूर्वदीप्ति शैली आदि उनमें प्रमुख है।

6.2.3.1 आत्मकथात्मक शैली

'घुडसवार', 'मकान', 'गले की जंजीर', 'लडकी की शादी' आदि कहानियों को पढ़ने से ऐसा लगता है कि उन संदर्भों को लेखक ने खुद जिया है। इन कहानियों में लेखक ही एक पात्र बनकर उपस्थित होते हैं। ये कहानियाँ पढ़ते वक्त ऐसा प्रतीत होता है कि ये लेखक का आत्मकथांश हो। घुडसवार कहानी का आरंभ कुछ इस प्रकार है - "मुझे एक दिन जिलाधीश का हुक्मनामा मिला। इसकी सपने में भी उम्मीद नहीं थी.... यह मेरी नौकरी का चौथा वर्ष था। उसके पहले मैं बहुत परेशान था। .....गाँवों में लोग मुझे बहुत ऊँचा अफसर समझकर खातिर करते थे और शहर में विद्वान। मैं शादी बारात, पार्टियों और समारोहों में अनिवार्य रूप से

---

1. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. 279

बुलाया जाता। मैं सुग्गे की तरह टॉय-टॉय बोलना भी सीख गया....।"[1] इस प्रकार 'मकान' कहानी भी आत्मकथात्मक शैली के प्रयोग के लिए उत्तम उदाहरण है - "मैंने चौककर सिर उठाया। मनोहर मेरे सामने दॉत निपोरे दुबका सा खडा है। मैं या तो चिट्ठी लिखने में इतना व्यस्त था या वही पता नहीं किधर से किसी....।"[2] 'गले की जंजीर' नामक कहानी भी आत्मकथात्मक शैली में लिखी गयी है - "जहाँ तक मुझे याद है, प्रेस में ऐसी घटना पहले कभी नहीं हुई थी। मैं गत ढाई-तीन वर्षों से प्रेस की छत पर एक कमरे में....।"[3] 'पहलवानी' कहानी को पढते वक्त भी आत्मकथात्मक शैली का मिसाल सामने आता है - "अचानक कोई व्यक्ति धीरे से फाटक खोलकर बरामदे में आया तो मैं चौका। मैंने सीधा होकर दरवाज़े की ओर देखा तो एक लम्बा-पतला नौजवान नज़र आया। ....मैं समझ गया कि वह भाई साहब को ही पूछ रहा है....मैंने और पूछताछ न करके उत्तर दिया, वह तो बाहर गए हैं, बैठिए।"[4] इसी प्रकार अमरकांत ने आत्मकथात्मक शैली में बहुत कहानियों की रचना की है जिसमें 'लड़की की शादी', 'ज़िंदगी और ज़ोंर', 'बीमारी', 'सहधर्मिणी', 'अमेरिका की यात्रा', 'कबड्डी', 'विजेता' आदि प्रमुख है।

6.2.3.2 पत्रात्मक शैली

अमरकांत ने पत्र (चिट्ठी) को संदर्भ के अनुसार कहानी में स्थान दिया है। अमरकांत की कहानी 'मित्र-मिलन' में दो मित्रों के बीच हुए पत्र-व्यवहार के

---

1. अमरकांत, घुडसवार, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 394
2. वही, पृ. 498
3. वही, पृ. 21
4. अमरकांत, पहलवानी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 45

संदर्भ में इस शैली का प्रयोग उन्होंने किया है। शिवनाथ के उमाशंकर के नाम पर भेजे गए पत्र को उसी रूप में उन्होंने प्रस्तुत किया है-

"प्रिय उमाशंकर,

राम-राम! मेरा यह खत देखकर तुम अचम्भा करोगे। मुझे जानकर बहुत खुशी हुई कि प्रभु की दया से तुम मजे में हो,..... शंकर भगवान की दया से सब ठीक है। मेरे साहबजादे सेक्रेटरियेट में सुपरिंटेंडेंट है। ...चिट्ठी ज़रूर लिखना।

तुम्हारा पुराना दोस्त

शिवनाथ

वस्तुतः पत्रात्मक शैली का प्रयोग संदर्भानुसार करते हुए अमरकांत ने कहानी को प्रभावशाली बनाया है।

6.2.3.3 विवरणात्मक शैली

अमरकांत ने अपनी कहानियों में विवरणात्मक शैली का प्रयोग भी किया है। कहानी में कभी-कभी विवरण देने की आवश्यकता पडती है। अमरकांत की कहानियों में कभी-कभी वातावरण की वर्णना, कभी-कभी व्यक्ति चरित्रों की वर्णना आदि मिलते हैं। उनकी अधिकांश कहानियों में बीच-बीच में इस शैली का प्रयोग मिलता है। 'कलाप्रेमी' कहानी में सुमेर के क्रियाकलापों का विवरण अमरकांत ने इस प्रकार दिया है - "यह एक महत्वपूर्ण यात्रा थी। सुमेर ने सवेरे आने की सूचना

दी थी, पर वह रातवाली ट्रेन से लगभग साढे दस बजे पहूँचा। उसने डिब्बे से ही पजावा के नेउर की तरह बाहर झाँक कर इधर-उधर देखा। फिर अटैची लेकर नीचे उतर गया। वह बडी ही फुर्ती से आगे लपकती हुई भीड़ के एक गोल में मिल गया और सिर झुकाकर सीधे फाटक की ओर बढ़ चला। उसे एक बार लगा कि कोई उसका.... वह लगभग पैंतीस वर्ष का एक दुबला पतला नौजवान था। उसकी आँखें बडी-बडी और खुबसूरत थी.....।"[1] सेवानंद कहानी में भी इसका उदाहरण मिलते हैं - "खपडे के पुराने बरामदे से नीचे उतर गये हेडमास्टर सेवानन्द लाल। कुछ देर तक खडे रह गये भारी, गहरी साँसें लेकर अपनी तेज धडकनों का संयमित करते हुए उन्होंने दरवाज़े के सामने साफ-सुथरे सेहन की अंतिम बाई सीमा पर हल्की हवा में धीरे-धीरे झूमते शीशम के वृक्ष को देखा और यह सोचकर खुश हो गये कि करीब पच्चीस वर्ष पूर्व ठीक उनकी पैदाइश के दिन ही यह वृक्ष लगाया गया था, जिसके साथ बढते हुए उसी तरह और मजबूत होकर हर दिन हर मौसम में आँधी-तूफान भी झेलते रहे। .....और क्वार के अंतिम दिनों की खट्टी-मीठी धूप में पेड-पौधे, ताड़, खजूर कच्चे-पक्के मकान, झोंपडियाँ-सभी में पहले से अधिक स्वच्छता, चमक और ताज़गी है।"[2] इस प्रकार अमरकांत ने 'खफर', 'भूतपूर्व श्रीमती की प्रेमकथा', 'एक धनी व्यक्ति का बयान' 'सपूत' आदि कहानियों में भी शैली का प्रयोग किया है जहाँ इसकी आवश्यकता की सख्त ज़रूरत पडी है।

---

1. अमरकांत, कलाप्रेमी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 418
2. अमरकांत, सेवानन्द, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 410

6.2.3.4 रेखाचित्र या व्यक्तिचरित्र की पद्धति

अमरकांत जी ने कहानी के सृजन में रेखाचित्र की पद्धति को अपनाया है। कहानी में पात्रों के चरित्रगत एवं रूप गत वर्णन में यह सहायक सिद्ध हुई है। ऐसे संदर्भों को पढ़ते वक्त लगेगा कि हम किसी रेखा चित्र पढ़ रहे हो। 'देश के लोग', 'जनमार्गी', 'काली छाया' आदि कहानियों में इस प्रकार की पद्धति को उन्होंने अपनाया है। 'देश के लोग' कहानी का प्रसंग इसके लिए उदाहरण है - "उसका शरीर छोटा और थुल-थुल था। मूँह चुकन्दर की तरह छोटा और रूखा था, लेकिन पतली नाक और बडी-बडी आँखों के कारण उसको बदसूरत नहीं कहा जा सकता। माथा उसका चौडा था और बाल उलटे फिरे थे। .....वह एक लोकप्रिय अध्यापक था, अर्थात वह अक्सर नये-नये फैशन की पोशाक पहनकर आता,....।"[1] इस प्रकार 'काली छाया' कहानी में इस पद्धति का प्रयोग लेखक ने यों किया है - "जीने के पास दो खाटें पडी थीं पतली और गहरी। एक पर सोलह या सत्रह वर्ष की एक लडकी सोयी थी। देह कोमल और पुष्ट। वह एक मैली-कुचैली साडी पहने थी। टाँगे नंगी घुटनों से कुछ अवर तक। उसके खुले बाल नीचे लटक रहे थे और उभरी छातियाँ निःशब्द साँसों पर लहरों की तरह उठ गिर रही थी।"[2] इसी प्रकार 'फर्क', 'दो चरित्र', 'जनमार्गी', 'नौकर' आदि कहानियों में भी आवश्यानुसार रेखाचित्र या व्यक्ति चरित्र की पद्धति को अमरकांत ने अपनाया है।

---

1. अमरकांत, देश के लोग, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 234
2. अमरकांत, काली छाया, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 404

6.2.3.5 पूर्व दीप्ति शैली

पूर्वदीप्ति (फ्लैश बैक) शैली का भी उपयोग अमरकांत ने अपनी रचना प्रक्रिया में किया है। इस पद्धति की एक विशेषता यह है कि कहानी कम समय में ही दीर्घकाल की यात्रा संपन्न करती है। अतीत की पृष्ठभूमि वर्तमान को अधिक विश्वसनीय बनाने में सहायक होती है।

'जनमार्गी' कहानी में अमरकांत ने इस पद्धति का प्रयोग किया है। 'जनमार्गी' कहानी का आरंभ बलराज का कमरा बंद करके कॉफी-हाऊस जाने से होता है। रास्ते में वह अतीत की स्मृति में डूब जाता है।

"ए रिक्शा!

जब वह बैठ गया, तो उसको महसूस हुआ कि वह हॉफ रहा है। उसके दिल की धडकन तेज़ हो गयी थी। सारे शरीर में उसकी कमज़ोरी मालूम होने लगी - खासकर बॉहों और पंगों में। .....वह किसी वर्षा के दिन और ठंडी हवा तथा गुलाब के फूल की कल्पना करने लगा। धीरे-धीरे वह शांत और खुश हो गया। ....उसको ऐसा लगा कि वह किसी हरे-भरे कुंज में पहूँचकर लेट गया है और मुस्करा रहा है.... उस समय उसकी उम्र चौबीस या पच्चीस वर्ष की रही होगी....।"[1] इस प्रकार अमरकांत ने बलराज की स्मृति द्वारा उसके अतीत और प्रेम संबन्ध को पाठकों के सम्मुख रखा है।

---

1. अमरकांत, जनमार्गी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड, पृ. 216

'शुभचिंता', 'मूस', 'छिपकली', 'निर्वासित', 'कलाप्रेमी', 'मछुआ' आदि कहानियों में भी इस शैली का प्रयोग हुआ है।

6.2.3.6 संवाद शैली

कहानियों के बीच-बीच में प्रसंगानुकूल संवाद को जोडने की प्रवृत्ति भी अमरकांत की कहानियों में लक्षित है। 'मौत का नगर' कहानी का यह प्रसंग इसके लिए उदाहरण है-

"कोई खास बात?" उन तीनों में से एक होठों में ही भुनभुनाकर पूछा।

"स्टेशन के पास एक आदमी को छुरा लगा है।" दूसरे ने सूचना दी

"हिन्दू है?"

"नहीं, मोहमडन है।"

"क्या हिम्मत गंज की तरफ किसी लडकी की लाश मिली है?"

"हाँ।"

"मोहमडन है?"

"नहीं, हिन्दु है।"[1]

इस प्रकार 'हंगामा', 'इंटरव्यू', 'हत्यारे' आदि कहानियों में भी इस पद्धति का उपयोग करके कहानी को प्रभावशाली बनाने की कोशिश अमरकांत ने की है।

---

1. अमरकांत, मौत का नगर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 377

6.2.3.7 सांकेतिकता

अमरकांत ने कभी-कभी संकेतों के माध्यम से भी अपनी बात कहने की कोशिश की है। 'मौत का नगर' का यह कथन "वह पतली सडक विधवा की माँग की तरह सूनी थी।"[1] वहाँ की भीषण स्थिति की ओर संकेत है। सांप्रदायिक दंगे के कभी भी फूटने की और वहाँ हुई या होनेवाली मौत की ओर संकेत है।

'गगन बिहारी' कहानी में पिता के बेटे से यह कहना कि "तो करो यही तुम भी बेटा। कोई गम नहीं, मैं तो अभी ज़िदा हूँ ही।"[2] बेटे के नालायक होने की ओर संकेत है।

इस प्रकार सांकेतिकता का भी आवश्यक प्रयोग अमरकांत ने किया है।

सारांशतः अमरकांत ने आत्मकथात्मक शैली, रेखाचित्र या व्यक्ति चरित्र की पद्धति, पूर्वदीप्ति, पत्रात्मक शैली आदि के प्रयोग द्वारा कहानी को अधिक प्रभावान्विति प्रदान करने की कोशिश की है।

6.2.4 प्रतीक योजना

अमरकांत ने कहीं-कहीं प्रतीकों का प्रयोग भी किया है। उनकी कहानियों के शीर्षक भी प्रतीकात्मक है। 'छिपकली' कहानी का शीर्षक प्रतीकात्मक है। छिपकली शोषक व्यवस्था का प्रतीक है जिसके अंतर्गत साधारण व्यक्ति की हैसियत कीडे-मकौडों से बेहतर नहीं है।

---

1. अमरकांत, मौत का नगर, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 378
2. अमरकांत, गगन बिहारी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 132

"इसी समय उसका ध्यान एक छिपकली की तरफ गया जो दीवार पर चुपचाप चिपकी थी और उसके सामने कुछ दूरी पर एक काला कीडा फड़-फड़ कर रहा था। रामजीलाल ने सोचा कि यह छिपकली पहले छोटी और दुमकटी थी, लेकिन अब उसकी दुम भी जम आई है और वह मोटी भी हो गई है। ....सहसा छिपकली कीडे की ओर दौडी, परंतु इसी समय कीडा उडकर नीचे फर्श पर पट से गिर पडा।"[1] यहाँ 'छिपकली' शोषक वर्ग का प्रतीक है और कीडे शोषित वर्ग का।

'ज़िंदगी और जोंक' कहानी का 'जोंक' प्रतीक है। 'जोंक' के दो प्रतीकार्थ हो सकते हैं। एक तो अदम्य जिजीविषा का दूसरा शोषण वृत्ति का। कुमुद शर्मा के अनुसार - "इसमें जोंक के प्रतीक से मानव की जिजीविषा को व्याख्यायित किया गया है। जीवन की दुखद या सुखद परस्थितियों का महत्व उतना नहीं होता जितना जीने की इच्छा का होता है।"[2] जोंक व्यक्ति की जिजीविषा का ही प्रतीक प्रतीत होता है।

'बस्ती' कहानी अमरकांत की प्रतीक योजना का अनुपम मिसाल है। प्रस्तुत कहानी 'बस्ती' पूरे भारत और उसकी स्थिति को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत करती है। 'बस्ती' हमारे देश भारत का प्रतीक है जिसको सदियों की गुलामीपन से कुछ महारथियों ने अपने अथक प्रयत्न से मुक्त कराया था। बस्ती को अपनाने के लिए हुए आँदोलन यहाँ भारत की मुक्ति के लिए चलाए गए स्वाधीनता आँदोलन का प्रतीक है। बाद में जिन नेताओं ने आंदोलन का नेतृत्व किया था, उन्हीं के हाथों बस्ती की ईंटों को चुराना, यहाँ के भ्रष्ट नेताओं के द्वारा भारतीय व्यवस्था को तहस

---

1. अमरकांत, छिपकली, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 231
2. इंडिया टुडे, सार्थक संघर्ष, 31 मई, 1987, पृ. 99

नहस करने का और समूचे भारत में अव्यवस्था फैलने का प्रतीक है। इस प्रकार 'बस्ती' पूर्णरूप से आदि से लेकर अंत तक प्रतीकों से भरपूर है।

'कुहासा' कहानी का शीर्षक 'कुहासा' गरीबी और अभावग्रस्तता का प्रतीक है।

"'कुहासे' की रात भीगती रही, भीगती रही। लगता था, इस कुहासे का कोई अंत नहीं है और यह शहर में ही नहीं सारे देश में फैल गया है।"[1]

'चाँद' कहानी का चाँद भी प्रतीकात्मक है। कहानी में प्रदीप कहता है - "इसलिए मैं ने कहा कि तुम चाँद हो। अब तुम्हारे अंदर अपनी रोशनी नही है बल्कि दूसरों की रोशनी लेकर तुम चमकते रहते हो।"[2] इस प्रकार देखे तो 'मकान' कहानी का 'मकान' व्यवस्था का प्रतीक है तो 'नौकर' कहानी का जंतु शोषितों का प्रतीक है।

वस्तुतः अमरकांत का अधिकांश पात्र पूरा वर्ग या समुदाय का प्रतिनिधित्व करता दिखाई देता है।

6.2.5 सादृश्य विधान

किसी वस्तु, दृश्य या घटना को देखकर कहानीकार अपने मन में हुए प्रभाव को ठीक उसी अर्थ में पाठक को संप्रेषित करना चाहते हैं। इसके लिए

---

1. अमरकांत, कुहासा, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 15
2. वही, पृ. 102

कहानी में ठीक उसी प्रकार की वस्तु, दृश्य या घटना को उपस्थित करते हैं - यही सादृश्य विधान है। इसके लिए कहानीकार उपमा, रूपक आदि तत्वों को अपनाते हैं।

जल में भीगे गुलाब की तरह खिल जाना, हाथों को चक्र की तरह घुमाना, कौए की भांति सिर घुमाकर देखना, गांजे की कई वर्ष पुरानी चीलम के समान खुबसूरत और मजबूत नाक, भेडों की तरह टकराना, आदि उनकी उपमाएँ हैं। एक धनी व्यक्ति का बयान' में सादृश्यविधान के लिए एक अच्छा उदाहरण है - "मैंने झोला उठाकर मेज के नीचे रख दिया और चुपचाप काम करने लगा। उत्तेजना से मेरे हृदय की गति तेज़ महसूस हुई। शुरू में मुझे खुशी ज़रूर हुई थी, पर जल्दी बुझ भी गयी। किसी विजय का भाव अथवा किसी के प्रति दुर्भावना मेरे अंदर नहीं उत्पन्न हुई। हाँ ऐसा अवश्य महसूस हुआ कि मैं एक खुले मैदान में पहूँच गया हूँ, मेरे फेफडों में ताजी हवा भर गई है और मुझे अपूर्व शांति, धैर्य और आनंद की मृदु तरंगे सहला रही है। नहीं कह सकता है कि ये भाव आत्महीनता की मजबूरी के अहसास से उत्पन्न हुए थे अथवा ये मेरी महत्वाकांक्षाओं के ही रूप थे। शायद इन सबसे कोई अलग चीज़ थी, वह जो कभी-कभी मनुष्य के अंदर पानी के बुलबुले की तरह उठकर लुप्त हो जाती है।"[1] इसमें बीच-बीच में उपमाएँ आयी है। जो कहानीकार के अनुभव को उसी तीव्रता में संप्रेषित करने के लिए सफल है।

6.2.6 लोकोक्ति और मुहावरे का प्रयोग

अमरकांत ने कहानियों में लोकोक्ति और मुहावरे का खूब प्रयोग किया है।

---

1. अमरकांत, एक धनी व्यक्ति का बयान, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 2, पृ. 271

6.2.6.1 मुहावरे

पसीना-पसीना होना

रंगे हाथों पकडना

गुड गोबर होना

नखरे फैलाना

चमडा झूलना

तुलसी का काढ़ा पिलाना

तहलका मचना

जंगल में मंगल करना

मुंह तोड जवाब देना

तिल-तिल जलना, कुकुर काशी सेबना

हाथ का मैल, हंडिया चाटना

अंगुली पकडते पकडते पहूँचा पकडना

कोल्हू का बैल होना

कोढ़ मैं खाज

छटी का दूध याद आना

चिकना खडा होना

काठ मारना

नाक कठवाना

खिचडी की खिचडी नहाना

6.2.6.2 लोकोक्तियाँ

चमार सियार तो डांट डपट खाते ही रहते हैं।

चिरई का पूत।

सभी कुकुर काशी सेवेंगे तो हंडिया कौन चाटेगा।

वह पूरे बबूल के लासा थे।

मैं अपने को बीमार गीदड की तरह समझने लगा।

बुड्ढा कौए की जीभ खाकर आया है

खेत खाए गदहा, मरा खाए जुलाहा

नीच और नींबू को दबाने से ही रस निकलता है।

सीधे का मुंह कुकुर चाटता है।

सीधी गाय ही खेत चरती है।

6.3 गीत-तत्व

अमरकांत ने अपनी कहानी 'फुलरानी' में संगीत का समावेश भी किया है जिसने कहानी के शिल्प को सहजता प्रदान की है। कहानी में रईसों के घर शादी-ब्याह के शुभ अवसरों पर वेश्याओं को बुलाने का और विदाई के रस्म के समय भैरवी, भजन, दादरा, गज़ल, पुरबी आदि को गाने का प्रसंग है। विदाई के समय के मुबारक गीत को कहानी में यों प्रस्तुत किया है-

"दुल्हनिया पिया के घर को चली

मुबारक हो, मुबारक हो।

दुल्हनिया बाबा का घर छोड चली
मुबारक हो, मुबारक हो।
दुल्हनिया अम्मा का आँचल छोड चली
मुबारक हो, मुबारक हो।"[1]

इस प्रकार गीततत्व का समावेश भी अमरकांत ने किया है जो उनकी कहानियों के शिल्प को अधिक शोभा देता है।

6.4 देशकाल एवं वातावरण

अमरकांत ने स्वातंत्र्योत्तर भारतीय समाज से अपनी कहानियों का विषय चुना है। जिस समय उन्होंने कहानी के क्षेत्र में प्रवेश किया, वह नये आंदोलन का समय था। इस आंदोलन को नयी कहानी की संज्ञा प्रदान की गई। सुरेन्द्र चौधरी के मत में - "नयी कहानी आज़ादी के बाद हिन्दी संसार के उस प्रसरणशील मानस की अभिव्यक्ति थी, जो देश-काल के परिवर्तनों और संभावनाओं से आंदोलित होने के साथ ही साथ कहीं संशयशील और तनावपूर्ण स्थितियों से भी गुज़र रहा था।"[2] वास्तव में यही अमरकांत की कहानियों का वातावरण है।

सन् 1947 के बाद नए उमंग और जोश से जगे भारतीय समाज को इतना बडा धोखा मिला कि उसने सपने में भी ऐसा नहीं सोचा था। अतः कह सकते हैं

---

1. अमरकांत, फुलरानी, अमरकांत की संपूर्ण कहानियाँ खंड 1, पृ. 291
2. रवीन्द्र कालिया, अमरकांत एक मूल्यांकन, पृ. 147

कि स्वातंत्र्योत्तर भारतीय जनता मोहभंग, घुटन, तनाव आदि की शिकार बनी थी। उनकी ज़िंदगी बदत्तर से बदत्तर होती गयी। गाँव की जनता गंभीर रूप से बेरोज़गारी और उससे उत्पन्न गरीबी की शिकार हो गयी। अभावग्रस्त ज़िंदगी से तंग आकर नवयुवक नौकरी की तलाश में शहर की ओर पलायन करने लगे। इसका एक कारण शहर की चकाचौंध भरी ज़िंदगी के प्रति उसका आकृष्ट होना और उसकी यह धारणा थी कि शहर की जिंदगी बहुत ही आरामतलब है और वहाँ मज़दूरी के बहुत सारे अवसर है। लेकिन वहाँ भी ज़िंदगी दुसह थी। शहर की अर्थकेन्द्रित स्वार्थी मानसिकता से लिपटी ज़िंदगी की अंधाधुंध दौड में की निरीह जनता का दम घुटने लगा।

अमरकांत ने अपनी कहानियों में इन दोनों परिवेशों का जिक्र किया है। उनकी कहानियों में गाँव की अभावग्रस्तता में जीता-मरता आम आदमी भी विद्यमान है तथा शहर के चकाचौंध में दम घुटनेवाली निरीह जनता तथा स्वार्थ और लालसा से भरी अमानवीय ज़िंदगी का भी अंकन है जिसकी मूलवृत्ति शोषण की है।

'मूस', 'दोपहर का भोजन', 'ज़िंदगी और जोंक', 'कुहासा', 'लडका-लडकी', 'पलाश के फूल', 'फर्क', 'वह हंसी' आदि कहानियों में ग्रामीण जीवन की आबोहवा का चित्रण हुआ है तो 'बहादुर', 'कुहासा', 'नौकर', 'प्रिय मेहमान', 'वह हंसी' आदि कहानियों में नगर परिवेश को अंकित करने की कोशिश भी अमरकांत ने की है।

6.5 निष्कर्ष

अमरकांत की कहानियों का शिल्प पक्ष भी उसके संवेदना पक्ष की भाँति संपन्न है। कहानियों में प्रयुक्त विभिन्न शब्द-प्रयोग, प्रतीक, मुहावरे और लोकोक्तियाँ एवं उसमें अभिव्यक्त भिन्न-भिन्न शैलियाँ आदि तत्व कहानी स्वरूप में घुल मिल गए है जिससे कहानी प्राणवान बन गयी है। कहानी की रचना में उसके अभिव्यक्ति पक्ष की उतनी ही प्रधानता है जितनी उसके कथ्य पक्ष की होती है। अमरकांत ने अपनी भाषा को हल्के-हल्के शब्दों से सजाया है। अंग्रेज़ी भाषा के शब्दों को अपनाते वक्त भी उन्होंने यह सरलता बरतने की कोशिश की है। उन्होंने ऐसे शब्दों का प्रयोग किया है जिससे हम चिरपरिचित है और हमेशा इस्तेमाल भी करते हैं। मुहावरे एवं लोकोक्तियाँ भी ऐसे ही हैं। उनकी कहानियाँ हमेशा एक ही शैली में लिखी नहीं गयी है, उसमें संदर्भानुकूल भिन्न-भिन्न शैलियों का समावेश भी हुआ है। वस्तुतः उनकी कहानियों का शिल्पपक्ष अनूठा एवं अद्वितीय है।